भारत की महिलाओं के सशक्तिकरण में डिजिटलीकरण की भूमिका का विश्लेषण

प्राप्तिः 06.11.25
स्वीकृतः 10.12.25

90

डॉ0 राकेश कुमार राणा
प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
एम0 एम0 एच0 कॉलेज,
गाजियाबाद, उ0प्र0
ईमेलः*ranarakesh@gmail.com*

नवनीत कुमार
शोधार्थी
ईमेलः*bikku1010@yahoo.co.in*

सारांश

दुनिया की आबादी में महिलाओं के हिस्सेदारी करीब आधी है। घर के कामों से लेकर समाज के दूसरे अहम मामलों को संभालने तक महिलाएं किसी में भी पीछे नहीं है। हालांकि ऐतिहासिक रूप से उन्हें समाज में दोयम दर्जे का दर्जा मिला है, जिससे आर्थिक भागीदारी के कम अवसर, संसाधनों तक सीमित पहुंच व राजनीतिक प्रतिनिधित्व कम है। इस असमानता या भेदभाव को कम करने हेतु डिजिटल शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता है। डिजिटल शिक्षा की आवष्यकता सिर्फ शहरों में ही नहीं अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में भी आवश्यक है। आज शहरी महिलाएं इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करने लगी है। किंतु ग्रामीण महिलाएं आज भी डिजिटल शिक्षा से वंचित है। आज सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल इंडिया, इंटरनेट साथी जैसे कार्यक्रम चलाकर वहां की महिलाओं को जागरुक कर रही है ताकि ग्रामीण महिलाएं भी इस डिजिटल युग का हिस्सा बन सके। डिजिटल क्षेत्र में लैंगिक अंतर को दूर करने के लिए बेहतर कानूनों की दिषा में जी–20 की पहल एक महत्वपूर्ण और समयबद्ध कदम का प्रतिनिधित्व करती है। इन नीतियों को विकसित करने और निगरानी करने के लिए, एक ठोस साक्ष्य आधार आवश्यक है जो दर्शाता है कि डिजिटल परिवर्तन सें महिलाएं किस तरह आगे बढ़ रही हैं। वैश्वीकरण के युग में, महिलाओं के दैनिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने के अतिरिक्त, महिला सशक्तिकरण किसी भी समुदाय की सामान्य उन्नति के लिए आवश्यक है। भारत और दुनिया भर में महिलाओं के लिए इन अवसरों से रोजगार और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में कई अलग–अलग प्रकार के उपयोगी परिवर्तन लाए गए हैं। अध्ययन द्वारा यह समझने का प्रयास करता है कि उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में महिलाओं को बुनियादी इंटरनेट का उपयोग और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। महिलाएं

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.90

अब दैनिक स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सूचनाएं समाचार के द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकती हैं, मोबाइल प्रौद्योगिकी के विकास के लिए धन्यवाद, जिसने दुनिया को अपनी उंगलियों पर सुलभ बना दिया है। महिलाएं शिक्षा के माध्यम से उन्हें प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम बनाने के अलावा आर्थिक रूप से अधिक स्वतंत्र बन सकती हैं। इस उद्देश्य के लिए, महिलाओं को एवं स्मार्टफोन का उपयोग कौशल सीखने, ऑनलाइन वित्तीय लेनदेन में संलग्न होने और दुनिया के रुझानों से अवगत कराने में मदद मिलेगी। नए डिजिटल उपकरण समावेशी वैश्विक आर्थिक विकास के एक नए स्रोत सशक्त कर रहे हैं। महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास का गहरा संबंध है। एक दिशा में अकेले विकास ही पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता को कम करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

1. प्रस्तावना–

किसी भी समाज की तस्वीर बदलने में महिलाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि मुझे योग्य माता दे दो मैं तुमको योग्य राष्ट्र दूँगा। आज हर क्षेत्र में महिलाएँ पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही हैं। महिला सशक्तिकरण के दौर में महिलाओं ने घर की देहड़ी से बाहर कदम बढ़कर स्वयं कामकाजी महिला होने का गौरव हासिल किया है तथा स्वयं की व समाज की स्थिति को परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया हैं। पुरातन समाज में किसी की माँ अथवा बहू या पत्नी के रूप में पहचानी जाने वाली महिला ने अपनी परम्परागत छवि को तोड़ा है। आज उसकी स्वयं की अपनी पहचान है। उसने पुरुषों के समकक्ष स्तर, अवसर तथा सामाजिक, आर्थिक व कानूनी अधिकार प्राप्त कर लिए हैं। एक कामकाजी महिला की स्थिति का ऑकलन करना एक कठिन कार्य है। यूँ तो प्रत्येक महिला कामकाजी होती है। परन्तु घरेलू महिला के कामकाज का आर्थिक मूल्य न होने के कारण उसे कामकाजी की श्रेणी में नहीं रखा जाता। पर्वतीय क्षेत्रों के संदर्भ में यदि देखा जाय तो यहाँ महिला ही घरेलू जीवन की धुरी होती है और कामकाज के बोझ के तले दबी रहती है, परन्तु उसके कार्य का आर्थिक रूप से कोई मूल्यांकन न होने के कारण उसे कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। सामान्य रूप से एक महिला का जीवन सदैव ही परिवार को समर्पित रहा है, परन्तु आज महिला परिवार से इतर स्वयं के लिए भी सोचने लगी है। वर्ष 1990 में वैश्वीकरण की शुरुआत के साथ–साथ प्रौद्योगिकी एक पुरुष–प्रभुत्व वाला पेशा था, लेकिन जैसे–जैसे महिलाएं क्षेत्र में शामिल होती गई हैं, वैसे–वैसे उनके प्रौद्योगिकी का उपयोग भी किया जा रहा है। डिजिटल क्रांति के वादों के परिणाम स्वरूप, भारत में अधिकांश महिलाओं तक सूचना और प्रौद्योगिकी तक पहुंच नहीं है। महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास का गहरा संबंध हैः एक प्राद्योगिकी में, अकेले विकास ही पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता को कम करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है एवं महिलाओं को सशक्त बनाने से विकास प्रक्रिया को लाभ मिल सकता है। यह मुख्य रूप से जनसंख्या कार्यक्रमों में उनकी उत्पादक भूमिकाओं के बजाय महिलाओं की प्रजनन में उच्च निवेश में परिलक्षित होता है। फिर भी विकासशील दुनिया में महिलाएं आर्थिक रूप से उत्पादक कार्यों में संलग्न हैं और आय अर्जित करती हैं। पर्यावरण, सामाजिक और चिकित्सा जरूरतों के साथ–साथ शिक्षा और सशक्तिकरण तक सभी महिलाओं की पहुंच उन्हें ''डिजिटल इंडिया'' पहल से पूरी तरह से लाभान्वित करने की अनुमति देगी, जिसे महिलाओं के आर्थिक विकास

का समर्थन करने के लिए मान्यता प्राप्त है। आईसीटी की मदद से डिजिटाइजेशन से महिला उद्यमिता के नए अवसर खुलेंगे। महिलाओं का सशक्तिकरण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बाधाओं के युग में प्रभावी ढंग से दूर करने के साथ–साथ डिजिटलीकरण प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए उन्हें मजबूत करने के लिए बेहतर तरीके से निर्णय लेने में षामिल होने की उनकी क्षमता का निर्माण करने में मदद कर सकता है। महिलाएं आत्मविश्वास के साथ नौकरी कर सकती है क्योंकि आईटी महिलाओं के पास लचीलेपन के रूप में रोजगार के विकल्प उपलब्ध हैं और घर से काम की अवधारणा पर काम करते हैं। पिछले बीस वर्षों में, कुछ गैर–सरकारी संगठन, जैसे कि भारत में स्व–नियोजित महिला संघ, महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार करने में प्रभावी रहे हैं क्योंकि उन्होंने भारत में शुरुआत की है, महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार करने में प्रभावी रहे हैं क्योंकि उन्होंने शुरुआत की है इस आधार के साथ कि महिलाएं आर्थिक विकास की प्रक्रिया के लिए मौलिक हैं। आर्थिक विकास और महिला सशक्तिकरण के बीच एक द्विदिश संबंध है, जिसे विकास के घटक–विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, कमाई के अवसरों, अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी में महिलाओं की क्षमता में सुधार के रूप में परिभाषित किया गया है।

1.1 सूचना एवं संचार तकनीक

वर्तमान समय में इंटरनेट और उपकरण जो लोगों को उसे संचालित करने की अनुमति देते हैं, समाज में लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण घटक हैं तकनीकी प्रगति ने मूल रूप से लोगों के जीवन जीने के तरीके को बदल दिया है, जिससे व्यापक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। देश की अर्थव्यवस्था डिजिटल क्रांति में अपने योगदान से भारी लाभ उठा रही है। देश भर में डिजिटल साक्षरता में सुधार के बावजूद, महिलाओं को प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का उपयोग करने में कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रौद्योगिकी नवाचार महिलाओं को अधिक ऊंचाई हासिल करने में कैसे मदद कर सकता है, इसके मुख्य निर्धारक उनके सामाजिक वर्ग और साक्षरता की डिग्री हैं। तथ्य यह है कि शहरी महिलाओं की तुलना में ग्रामीण महिलाएं प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का कम उपयोग करती हैं, साक्षरता एक ऐसी समस्या है जो प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग में बाधा डालती है और इसके उपयोग की प्रमुख समस्याओं में से एक है। ग्रामीण महिलाओं के लिए तैयार किए गए कार्यक्रमों में कई खामियां हैं, लोगों ने तकनीक की बदौलत महत्वपूर्ण काम किए हैं, उनमें कुछ उल्लेखनीय सफलताएं भी हैं। इस तरह के आधुनिक विचारों वाली महिलाओं को सफल होने का मौका दिया जाना चाहिए, अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता के अपने स्तर को बढ़ाने के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करना चाहिए। आईसीटी मुख्य रूप से मौलिक प्रक्रियाओं के उपयोग के माध्यम से महिलाओं को सषक्त बनाने पर केंद्रित है, यह अध्ययन महिलाओं के लिए डिजिटल प्रोत्साहनों में व्यापक असमानता को दर्शाता है जो सामाजिक आर्थिक असमानताओं में योगदान देता है।

1.2 डिजिटल युग में महिलाएं

यदि महिलाओं को एक मंच दिया जाए और मोबाइल फोन का उपयोग करने में सहायता की जाए तो वे वर्षों से चली आ रही बाधाओं को दूर करने में सक्षम हो सकती हैं। यह निर्धारित करने के लिए कि किन सुविधाओं को मजबूत करने की आवश्यकता है, पुरुषों और महिलाओं के बीच की

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.90

खाई के कारणों को निर्धारित करना महत्वपूर्ण है। उपयोग के इंटरनेट उपयोग करने के आंकड़ों के अनुसार, केवल 29% महिलाएं इंटरनेट का उपयोग करती हैं। यह तय करने के लिए कि किन सुविधाओं को बढ़ाने की आवश्यकता है, महिला एवं पुरूष में असमानता में योगदान करने वाले कारकों की पहचान करना महत्वपूर्ण है। डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास ने आईटी क्षेत्र में बड़ी संख्या में नए अवसर पैदा किए हैं। पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी में काफी विस्तार हुआ है, और कंपनी के संचालन की आउटसोर्सिंग के परिणामस्वरूप आईटी क्षेत्र में नए रोजगार का सृजन हुआ है, जिनमें से कई महिलाओं द्वारा लिए गए हैं। हालांकि, अध्ययन से पता चलता है कि महिलाओं में कई प्रशासनिक और पेशेवर क्षमताओं की कमी होती है, जिसके कारण उन्हें पुरुषों के अधीन होना पड़ता है और उन्हें छोटे–मोटे काम करने पड़ते हैं। हालाँकि, नए प्लेटफॉर्म भारतीय महिलाओं के लिए रोजगार की संभावनाएं खोल रहे हैं, और साझा अर्थव्यवस्था उन्हें शारीरिक गतिशीलता की बाधाओं को दूर करने और काम और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने में सक्षम बनाती है। इस अर्थव्यवस्था द्वारा सृजित रोजगार के अवसरों में कोई सामाजिक भेदभाव नहीं है। इसे आगे बढ़ने वाली महिलाओं और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को संतुलित करने दोनों पर लागू किया जा सकता है।

1.3 महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास

भारतीय महिलाओं ने दासता और पुरुष वर्चस्व की अपनी सदियों पुरानी बेड़ियों को तोड़ लिया है। वह अपने स्वतंत्र रूप से गर्व और सम्मान के साथ सामाजिक उन्नति की सीढ़ी चढ़ने लगी है। भारत में महिलाओं को अब ऊपर उठाया गया है और उन्हें राजनीतिक, सामाजिक, घरेलू और शैक्षिक सहित जीवन की सभी गतिविधियों में पुरुषों के बराबर दर्जा दिया जा रहा है। लेकिन फिर भी महिलाओं को गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है क्योंकि महिलाएं कुल आबादी के आसपास सुरक्षित हैं। इसके लिए महिला सशक्तिकरण को देश के आर्थिक विकास में महिलाओं को शामिल करने के लिए कुछ हस्तक्षेप की आवश्यकता है। विकास हस्तक्षेप जो महिलाओं की आय और भौतिक संपत्तियों सहित वास्तविक लिंग आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिससे महिला सशक्तिकरण में वृद्धि होगी और गरीबी में कमी आएगी। इस हस्तक्षेप से महिला सशक्तिकरण शुरू होगा और हद तक आगे बढ़ेगा। कुछ नए हस्तक्षेपों के कार्यान्वयन से महिला सशक्तिकरण में वृद्धि की दर उल्लेखनीय रूप से बढ़ जाएगी।

1.4 महिला सशक्तिकरण और शिक्षा

विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह ज्यादातर लड़कियों और महिलाओं के लिए सभी के लिए आवश्यक है क्योंकि यह अन्य अवसरों के लिए एक प्रवेश बिंदु है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में निवेष विशेष रूप से अधिक और उच्च लाभांश देता है। वर्तमान में 21वीं सदी में लड़कों और लड़कियों के बीच शिक्षा के मामलों में कोई अंतर नहीं है। शहरी या ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं शिक्षित हो चुकी हैं एवं स्वास्थ्य देखभाल और अपने बच्चों की जरूरतों के महत्व को पहचान सकती हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर

कम है। अंत में यदि महिलाएं शिक्षित होंगी तो अर्थव्यवस्था की स्थिति में सुधार होगा। जिससे वे अधिक संख्या में अवसरों को हासिल कर सकते हैं और पहले से अधिक मजबूत और शक्तिशाली बन सकते हैं।

2. अध्ययन का उद्देश्य

अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक पद्धति या मॉडल की प्रक्रिया के माध्यम से प्रश्न का उत्तर खोजना है। अनुसंधान प्राथमिक है जो मौलिक ज्ञान के उत्पादन पर विचार कर रहा है। अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं ।

- भारतीय महिलाओं द्वारा तकनीकी कौशल का उपयोग करने हेतु की जानी वाली सामाजिक समस्या में स्त्री पुरूष के मध्य असामनता का अध्ययन।
- डिजिटलीकरण और आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका और योगदान का अध्ययन करना।
- प्रौद्योगिकी के उपयोग और शहरी और ग्रामीण महिला सशक्तिकरण शिक्षा के अनुपात का अध्ययन करना।
- आईसीटी उपकरणों के उपयोग और शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को प्रभावित करने वाले कारकों और गरीबी के स्तर को जानने का अध्ययन करना।

3. परिकल्पना

इस अध्ययन में उद्देश्यों और साहित्य की व्यापक समीक्षा के आधार पर शोध कार्य के लिए कुछ परिकल्पना तैयार की गई है, वर्तमान अध्ययन की मुख्य परिकल्पना इस प्रकार है:

- शहरी और ग्रामीण महिलाओं द्वारा आईसीटी उपकरणों के उपयोग और उनके गरीबी स्तर के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- डिजिटलीकरण द्वारा शहरी और ग्रामीण महिलाओं को उनके आर्थिक विकास को प्रभावित नहीं कर रहा है।

4. अनुसंधान और शोध पत्र का क्षेत्र

शोध का क्षेत्र उत्तर प्रदेश का गाजियाबाद जिला है तथा इस शोध कार्य के लिए दैव निर्देशन विधि द्वारा 120 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है

4.1 समंको का संग्रहण

भौतिक और सामाजिक–विज्ञान, मानविकी और व्यवसाय सहित अध्ययन के सभी क्षेत्रों में समंक संग्रह अनुसंधान का हिस्सा है। समंको को परिभाषित करने के लिए अध्ययन या वरीयता के क्षेत्र की परवाह किए बिना अनुसंधान की अखंडता बनाए रखने के लिए सही समंको संग्रह बहुत महत्वपूर्ण है। इस शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक समंको का उपयोग किया जाता है और समंको की व्याख्या प्राथमिक डेटा पर आधारित होती है।

4.2 सेंपल साइज की गणना

इस शोध कार्य के लिए उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के 120 उत्तरदाताओं का चयन दैव निर्देशन विधि से किया गया है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.90

4.3 समंको का संकलन और विश्लेषण

तालिका संख्या–1.1

उत्तरदाताओं का क्षेत्रवार वर्गीकरण

	संख्या	प्रतिशत
शहरी महिलाएं	70	58.33
ग्रामीण महिलाएं	50	41.64
कुल	**120**	**100 प्रतिशत**

यह देखा गया है कि उपरोक्त तालिका संख्या 1.1 से क्षेत्रवार उत्तरदाताओं का वर्गीकरण 58.33 प्रतिशत उत्तरदाता शहरी क्षेत्र से हैं और 41.64 प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र से हैं।

तालिका संख्या–1.2

आयु के अनुसार प्रतिवादी का वर्गीकरण

	शहरी महिलाएं		ग्रामीण महिलाएं	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
0–18	15	21.43	5	10.00
19–28	15	21.43	15	30.00
28–38	25	35.71	12	24.00
38 से अधिक	15	21.43	18	36.00
कुल	**70**	**100.00**	**50**	**100.00**

यह उपरोक्त तालिका संख्या से देखा जा सकता है। 1.2 शहरी क्षेत्र के उत्तरदाताओं के आयुवार वर्गीकरण में 21.43 प्रतिशत उत्तरदाता 0–18 आयु वर्ग के हैं जबकि 21.43 प्रतिशत उत्तरदाता 19–28 आयु वर्ग के हैं, 35.71 प्रतिशत उत्तरदाता 28–38 आयु वर्ग के हैं और 21.43 प्रतिशत उत्तरदाता 38 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के हैं। ग्रामीण क्षेत्र में 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता 0–18 आयु वर्ग के हैं जबकि 30.00 प्रतिशत उत्तरदाता 19–28 आयु वर्ग के हैं, 24.00 प्रतिशत उत्तरदाता 28–38 आयु वर्ग के हैं और 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता 38 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के हैं। हम कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 19 से 28 आयु वर्ग के हैं।

तालिका संख्या–1.3

शिक्षा के अनुसार प्रतिवादी का वर्गीकरण

	शहरी महिलाएं		ग्रामीण महिलाएं	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च माध्यमिक	05	7.14	02	4.00
उच्चतर माध्यमिक	25	35.71	18	36.00
स्नातक	15	21.43	12	24.00
स्नातकोत्तर	15	21.43	10	20.00
व्यावसायिक	10	14.29	08	16.00
कुल	**70**	**100.00**	**50**	**100.00**

यह उपरोक्त तालिका संख्या से देखा जा सकता है। 1.3 शहरी क्षेत्र के उत्तरदाताओं के शिक्षावार वर्गीकरण में 7.41 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल से हैं जबकि 35.71 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चतर माध्यमिक समूह से हैं 21.43 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक समूह से और 21.43 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातकोत्तर हैं और 14.29 प्रतिशत उत्तरदाता व्यावसायिक शिक्षा से हैं। ग्रामीण में 4.00 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल से हैं, जबकि 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चतर माध्यमिक समूह से हैं, 24.00 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक समूह से हैं और 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातकोत्तर हैं और 16. 00 प्रतिशत उत्तरदाता व्यावसायिक शिक्षा से हैं।

तालिका संख्या–1.4

शहरी और ग्रामीण महिलाओं द्वारा आईसीटी उपकरणों का उपयोग और उनका गरीबी स्तर

	शहरी महिलाएं भारित औसत माध्य	ग्रामीण महिलाएं भारित औसत माध्य
उपकरण	3.0	2.5
प्रौद्योगिकी शिक्षा	3.7	2.4
अनुप्रयोगों का उपयोग	4.0	3.0
सक्रिय अध्ययन	3.3	2.1
अवसर	3.2	2.7
कार्य संस्कृति	3.1	2.5
नेविगेशन उपकरण	3.9	2.9
साथियों द्वारा उपयोग	4.0	2.1

उपरोक्त तालिका संख्या 1.4 से शहरी और ग्रामीण महिलाओं द्वारा आईसीटी उपकरण का उपयोग अलग–अलग मापदंडों के विभिन्न भारित औसत माध्य की गणना लिकर्ट स्केल की मदद से की जाती है।

तालिका संख्या–1.5

शहरी और ग्रामीण महिलाओं के डिजिटलीकरण और आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

	शहरी महिलाएं भारित औसत माध्य	ग्रामीण महिलाएं भारित औसत माध्य
सुविधाएं	3.1	2.4
इंटरनेट की गति	3.6	2.5
गेजेट का उपयोग	3.9	2.9
प्रोद्योगिकी का ज्ञान	3.3	2.1
साफ्टवेयर का ज्ञान	3.6	2.8
उपलब्ध संसाधन	3.2	2.7
समंक सुरक्षा	3.1	2.5
अनुकूलतम समता	3.9	2.8
सीखने के प्रति प्रेरणा	3.8	2.1
ऑनलाईन कक्षाएं	3.7	2.9

उपरोक्त तालिका संख्या से शहरी और ग्रामीण महिलाओं के डिजिटाइजेशन को प्रभावित करने वाले तत्व के अलग–अलग मापदंड अलग–अलग भारत औसत माध्य को लाइकर्ट स्केल की मदद से कैलकुलेट किया जाता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.90

1.6 परिकल्पना परीक्षण

1. H0 - शहरी और ग्रामीण महिलाओं द्वारा आईसीटी उपकरणों के उपयोग और उनके गरीबी स्तर के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या–1.6

परिकल्पना परीक्षण	परिकलित मूल्य	तालिका मूल्य
काई वर्ग परीक्षण	4.114	2.17

5 प्रतिशत महत्वपूर्ण स्तर और 7df में 95 प्रतिशत मानक त्रुटियों में तालिका मान 2.17 है और परिकलित मान 4.114 है। इसका मतलब है कि शून्य परिकल्पना (H0) अस्वीकृत है। शहरी और ग्रामीण महिलाओं द्वारा आईसीटी उपकरण के उपयोग के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

2. एच0–डिजिटलीकरण षहरी और ग्रामीण महिलाओं और आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं है।

तालिका संख्या– 1.7

परिकल्पना परीक्षण	परिकलित मूल्य	तालिका मूल्य
काई वर्ग परीक्षण	4.208	3.33

5 प्रतिशत महत्वपूर्ण स्तर और 95 प्रतिशत मानक त्रुटियों में 9df में तालिका मान 3.33 है और परिकलित मान 4.208 है। इसका मतलब है कि शून्य परिकल्पना (H0) अस्वीकृत है। इसका मतलब है कि डिजिटलीकरण शहरी और ग्रामीण महिलाओं को काफी प्रभावित कर रहा है।

5. निष्कर्ष

डिजिटल युग ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए असीम संभावनाएं प्रदान की है। हालांकि इस क्षेत्र में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है ताकि हर महिला डिजिटल साधनों का लाभ उठा सके। डिजिटल युग का सही उपभोग कर महिलाएं न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकती है बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव भी ला सकती है। इसके लिए सभी को मिलकर काम करने की आवश्यकता है, प्रौद्योगिकी से संबंधित कार्यक्रमों का प्रचार अधिक हो और सरकार द्वारा नई–नई योजनाएं बनाकर महिलाओं को उनके प्रति जागरूक करना होगा। डिजिटल कारण को बढ़ावा देकर महिलाओं को सषक्त बनाया जा सकता है। डिजिटलाइजेशन के कारण उनकी अर्थव्यवस्थाएं मजबूत और अधिक स्थिर हैं। डिजिटलीकरण को बढ़ावा देकर महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। डिजिटल भुगतान विधियों का आगमन महिलाओं को किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी का शिकार हुए बिना प्रभावी भुगतान करने में सक्षम बनाता है। विभिन्न विश्लेषण तकनीकों के उपयोग के साथ, उनके प्रदर्शन के आधार पर ऐसी डिजिटलीकरण परियोजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए एक तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। ग्रामीण महिलाएं जो डिजिटल रूप से साक्षर हैं, वे प्रौद्योगिकी का उपयोग करने और आत्मनिर्भर बनने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं।

संदर्भ

1. कुशवाहा, डॉ. षिव बिहारी (2023): महिला सशक्तिकरण पर डिजिटलीकरण का प्रभाव में शोध पत्र।
2. कुमारी, मधु (2024): सोशल मीडिया और महिला सशक्तिकरण, शोध पत्र।
3. मुखर्जी, डॉ. प्रदीप कुमार (2020) डिजिटल साक्षरता से सशक्त होती ग्रामीण महिलाएं, आर्टिकल कुरूक्षेत्र।
4. सिंह, डॉ. राम समुझ (2018): महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, शोध पत्र।
5. पुट्टराजा और ओडी हेगड़े (2012), कर्नाटक में जनजातीय महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण: मैसूर और चामराजनगर जिलों में एक केस स्टडी, स्टड ट्राइब्स ट्राइबल्स, 10(2): पृ० सं०–**173–181**
6. स्माईल फाउण्डेशन, ब्लॉग (2023), महिला सशक्तिकरण को डिजिटल सशक्तिकरण की आवश्यकता है।
7. चन्द्रा, डॉ. तुलिका (2018): कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण, शोध पत्र।
8. अर्पिता शर्मा (2011), ''महिला सशक्तिकरण: मील के पत्थर और चुनौतियाँ'', कुरूक्षेत्र, खंड. 59, क्रमांक 11, पृ० सं०–**10–15**
9. अलॉयसियस पी. फर्नांडीज (2023), भारत में महिलाओं की सामाजिक/सशक्तिकरण स्थिति पर स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव, इकोनॉमिक जर्नल, 89, पृ० सं०–**537–58**.
10. गर्ग विजय (2024), डिजिटल युग में स्त्री सशक्तिकरण आर्टिकल, रविवार दिल्ली।
11. मिश्रा डॉ0 आशीष एवं संगीता चौहान महिला सशक्तिकरण पर डिजिटलीकरण का प्रभाव इकोनॉमिक जर्नल, 89, पृ० सं०–**537–58.**